10

एक दुर्लभ और यादगार पाठ

किसी भी विषय को पढ़ाने के दो तरीके हो सकते हैं, एक तो अध्यापन के बने-बनाए ढर्रे पर चलते हुए पाठ्य पुस्तकों को विद्यार्थी तक पहुँचा देना। इसे ज़्यादातर लोग पसन्द करते हैं। और दूसरा है इस ढर्रे को तोड़कर, आगे निकलकर विद्यार्थियों को विषय के प्रति जिज्ञासाओं और सवालों से भर देना।

इस पुस्तक अंश में प्रसिद्ध लेखक सी.पी. स्नो ने इस बात को रेखांकित किया है कि कोई शिक्षक अगर एकाध घण्टे के लिए भी नीरसता का चोगा छोड़ अपने उत्साह को विद्यार्थियों के साथ बाँटे तो वे क्षण जीवन भर के लिए प्रेरणादायक व यादगार बन सकते हैं। साथ ही उन्होंने विज्ञान पढ़ाने की रेखीय विधियों पर सवाल उठाए हैं।

स्वतंत्रता और सीखना

अक्सर हम देखते हैं कि छोटे बच्चे हों या बड़े, अगर उन्हें लिखने के लिए कहा जाए तो आमतौर पर वे अपनी किताबों में से रटी-रटाई बातें जस-की-तस लिख देते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि ज़्यादातर बच्चों को किताबों से मिलने-जुलने, दोस्ती बनाने का मौका ही नहीं मिलता। कुछ बच्चे भाषा और लिपि की जानकारी के बावजूद नया रचने से डरते हैं क्योंकि उनकी मौलिक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन ही नहीं दिया जाता है। बहुत बार बच्चे विचार गढ़ने की क्षमता को भी प्रदर्शित करते हैं। अगर ऐसे अवसर मिलें तो बच्चों के लेखन में मौलिकता की भरपूर झलक मिलती है।

29

शैक्षणिक संदर्भ

अंक-8, (मूल अंक-65) सितम्बर-अक्टूबर 2009

इस अंक में

5 | **मैं, मेरा घर, गाँव, स्कूल और किताबें**
मुकेश मालवीय

10 | **एक दुर्लभ और यादगार पाठ**
सी.पी. स्नो

19 | **बेंज़ीन की संरचना और केकुले .....**
सुशील जोशी

29 | **स्वतंत्रता और सीखना**
जितेन्द्र कुमार

42 | **भोर के पहले का अन्धकार**
हेमा रामचन्द्रन

48 | **त्वरण, वेग और चाल**
हिमांशु श्रीवास्तव

59 | **सूरज का अपनी धुरी पर घूमना**
माधव केलकर

71 | **लड़कियों की शिक्षा अब भी चुनौती है**
रिनचिन एवं महीन

83 | **स्कूल के दोस्त**
जूपाका सुभद्रा

92 | **अपने पैरों पर खड़े होकर दिखलाओ**
अम्बरीष सोनी